Newspaper Clips
November 10, 2015

Steer partners with IIT Delhi on sustainable polymers

http://www.plasticsnews.com/article/20151109/NEWS/151109878/steer-partners-with-iit-delhi-on-sustainable-polymers

Indian extruder maker Steer Engineering Pvt. Ltd. said Nov. 5 that it is partnering with the Indian Institute of Technology Delhi to work on joint research and the development of "newer and more sustainable polymers."

Bangalore-based Steer said the partnership with the Industry Interface Organization at IIT Delhi, called FITT, aims to build stronger links between universities and the plastics industry.

"The collaboration between Steer and FITT is a step towards building a strong connect between the industry and the academia to foster an active community for exchange of knowledge around the development of advanced polymers," said Babu Padmanabhan, Steer's managing director and chief knowledge officer, in a statement.

The company did not provide more details but said it would work with students at IIT Delhi on research projects and publish joint scientific reports with the school. It said it would supply one of its Omega 1.71 extruders to the partnership.

Times Of India ND 10/11/2015 P-11

It takes 2 to 14 yrs in IIT-B to complete PhD

Institute's Media Body Compiles Data Since '90

Yogita.Rao@timesgroup.com

Mumbai: Researchers take an average of six years to complete a PhD at IIT-Bombay, according to data compiled from 1990 onwards by students of the institute.

The maximum time, taken by two candidates, has been around 14 years while the quickest has been two years. All four were from the chemical engineering department. Computer science engineers, on an average, take the longest time (6.7 years) to complete their PhDs, while civil engineers take the least (5.1 years).

The students' media body on campus, Insight, has compiled the data available with the institute and analysed the time taken by researchers to complete their PhDs.

While the general perception on campus is that researchers take about five years, a majority of them, around 32%, have taken six years on an average. More than 40 candidates have even taken 10 or more years. The two candidates from the chemical engineering department who have taken about 14 years to finish their PhDs are deemed to be rare cases.

Among the departments, PhD candidates from computer science and engineering, humanities, mathematics, bio-sciences and bioengineering, metallurgical engineering have taken over six years to complete their research. Civil engineering and earth sciences departments have taken lesser time compared to the others.

TOI

Part-time PhD candidates, who make up for a significant number, take longer than the others as the candidates are also doing jobs

Devang Khakhar, director of the institute, said that different departments have a different range of time taken to complete PhDs. It also depends on the subject of research, he said.

"The part-time PhD candidates, who make up for a significant number, take longer than the others as the candidates are also doing jobs. The institute does not have a segregated list, but we will soon work on it and have a better analysis," said Khakhar.

Though the students have taken data available with the institute from 1990, not all PhDs before 1999 have uploaded their theses online. So, the data before 1999 is incomplete. The analysis is based on the data available online, said a student of the institute.

"There's a lot of data in the institute from various sources, and we thought it would be interesting if we present it in a visually intuitive way. There's tremendous scope for such analysis, and it'll throw interesting insights into various things," said Mihir Kulkarni, one of the chief editors of Insight.

Nai Duniya ND 10.11.2015 P-11

ऐसा यंत्र जो हड्डी जोड़ेगा फिर शरीर में घुल जाएगा

मुकेशचंद्र श्रीवास्तव >> वाराणसी

- आईआईटी बीएचयू के आर्थोपेडिक विभाग में शोध
- वैज्ञानिकों ने तैयार की बायो पोलीमर रॉड

आईआईटी बीएचयू के वैज्ञानिकों ने ऐसा यंत्र तैयार किया है, जिसे हड्डियों के टूटने पर लगाने के बाद निकालने की जरूरत नहीं पड़ेगी। कुछ दिनों बाद वह हड्डियों में ही गल जाएगा। इसे बायो पोलीमर रॉड का नाम दिया गया है। आईएमएस आर्थोपेडिक विभाग के डॉ. अमित रस्तोगी व आईआईटी के डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव के नेतृत्व में खरगोश पर किए गए इस रिसर्च का पेपर जर्नल ऑफ आर्थोपेडिक और जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी में प्रकाशित हुआ है।

ऐसा है यंत्र

बायो पोलीमर पोली टेक्टी एसिड कुछ हड्डी का ही पदार्थ है। वैज्ञानिकों ने हाइड्रोक्सी एपेटाइट को मिलाकर टूटी हुई हड्डियों में लगाने के लिए छोटे-छोटे कील, प्लेट और रॉड बनाए हैं। एक्सीडेंट आदि में हड्डियों के टूटने पर उसमें लगाकर कुछ दिनों के लिए छोड़ दिया जाता है। फिर जैसे-जैसे कोशिकाएं बढ़ती हैं, टूटी हुई जगहों पर यह रॉड जगह बनाने लगता है।

बायो पोलीमर की खासियत

बायो पोलीमर स्वतः बायो डीग्रेडेबल है। यानी उसे दोबारा ऑपरेशन आदि के माध्यम से निकालने की जरूरत नहीं है। शोध में पाया गया कि छह माह से एक साल तक यह पोलीमर रॉड अंदर ही गल जाते हैं। इसमें आम हड्डियों से लोड क्षमता अधिक होती है।

अब स्टैंडरलाइजेशन का काम

आईआईटी, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव कहते हैं कि अक्सर हड्डियों के टूटने के बाद रॉड लगाई जाती है और जुड़ जाने के बाद उसे ऑपरेशन कर निकाला जाता है। बायो पॉवर पोलीमर रॉड शरीर में घुल जाने के साथ ही हड्डियों की क्षमता को और बढ़ाती है। खरगोशों पर शोध से सफलता मिली है। अब इसके स्टैंडरलाइजेशन का काम चल रहा है।

Economic Time Hindi 10.11.2015 P-02

IIT-NIT के लिए सिंगल एग्जाम की तैयारी

[अनुभूति विश्नोई | नई दिल्ली]

ह्यूमन रिसोर्स मिनिस्ट्री ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (आईआईटी) और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एनआईटी) के लिए सिंगल एग्जाम आयोजित करने के साथ ही छात्रों की स्क्रीनिंग के लिए सैट के जैसा एप्टिट्यूड टेस्ट का भी प्रपोजल दिया है, जिससे कोचिंग इंडस्ट्री के असर को कम किया जा सकेगा। स्मृति ईरानी की अगुवाई वाली मिनिस्ट्री की ओर से बनाई गई कोर कमेटी की पूरी रिपोर्ट ईटी ने देखी है और इसके तीन मुख्य बिंदु हैं:

रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि आईआईटी ज्वाइंट एंट्रेंस एग्जाम की तैयारी में छात्रों को मदद करने वाले कोचिंग सेंटर्स के लिए एक रेगुलेटर बनाया जाए। रिपोर्ट में कहा गया है कि कोचिंग एक बड़े मुनाफे वाली लगभग 24,000 करोड़ रुपये सालाना की इंडस्ट्री है।

नया जेईई 2017

रिपोर्ट में 2017-18 से एग्जामिनेशन के लिए एक नए सिस्टम का प्रपोजल देते हुए अमेरिका में एजुकेशन टेस्टिंग सर्विस की तरह नेशनल टेस्टिंग सर्विस शुरू करने की बात है। प्रपोजल के मुताबिक, जेईई में शामिल होने वाले चार-पांच लाख छात्रों को चुनने के लिए एक एप्टिट्यूड टेस्ट आयोजित की जाए।

2016 के एग्जाम के लिए

आईआईटी के लिए दो चरणों में होने वाली परीक्षा कुछ बदलावों के साथ 2016 और शायद 2017 में भी जारी रहेगी। रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि इस वर्ष सितंबर में ज्वाइंट एडमिशन बोर्ड की कमेटी के सुझाव के मुताबिक जेईई (मेन) में बदलाव किए जाएं।